IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882
INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारतीय समाज में परिवर्तन के विशेष संदर्भ में वैश्वीकरण

हवाई सिंह गोठवाल

सहायक आचार्य समाजशास्त्र

राजकीय कन्या महाविद्यालय

गुड़ा, नीमकाथाना, राजस्थान

शोध सारांश

वैश्वीकरण वर्तमान आधुनिक समय की पहचान है, जिसके कारण सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड एक वैश्विक गांव बन गया है। वैश्वीकरण एक बहुलवादी सामाजिक प्रक्रिया है जिसका प्रभाव सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक क्षेत्रो पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। भारत का प्रत्येक क्षेत्र अपनी स्वयं की एक अलग संस्कृति एवं कला रखता है। संचार के साधनों के द्वारा राष्ट्र–नाज्य के विचार और आर्थिक नीतियों क्षेत्रीय सीमाओं को लांध कर बाहर जा रही हैं तथा साथ–साथ में स्थानीय संस्कृति के विभिन्न स्वरूपों जैसे परिवार, पड़ोस, समुदाय इत्यादि को भी प्रभावित कर रही है तथा एक प्रकार की सामाजिक मानक शून्यता ला रही है। आर्थिक बाजारीकरण से किसान एवं मजदूर ही नहीं प्रभावित हो रहे हैं, बल्कि वैश्वीय संस्कृति से परम्परागत संस्कृति यानि लोक संस्कृति एवं लोक समाज भी नष्ट हो रहा है। दूसरी ओर अन्य देशों में इनका विस्तार भी हो रहा है। इस सभ्यता एवं संस्कृति पर वर्तमान सन्दर्भ मे, जो वैश्वीकरण के सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव पड़े हैं।

शब्द कुजी :– वैश्वीकरण, सामाजिक, अधिकार, व्यापार, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक।

प्रस्तावना

21वीं सदी में सामाजिक परवर्तन पर कोई चर्चा, वैश्वीकरण के संदंभ पर कुछ विचार किए बिना हो ही नहीं सकती। आज वैवीकरण या भूमडलीकरण शब्द उसी तरह प्रचलित है, जैसे कि 20वीं सदी में आधुनिककरण तथा विकास की प्रक्रियाओं में सामाजिक परवर्तन के लिए प्रयोग किया जाता था। एक समय संसार को विश्व गाँव की कल्पना दिन में सपना देखने की तरह थी, लेकिन 20वी सदी के अत में यह कल्पना वास्तविकता में बदल गयी। एक तरफ उदाहरण के तौर पर फैक्स मशीन एवं इटरनेट की सुविधाऐं उपलध हो गई, जिनके बारे में कभी सोचा ही नहीं था। तीन दशक पूर्व भारत में ऐसा हुआ भी नीहं था। आज वैश्वीकरण ने हर क्षेत्र में मानवीय क्रियाओं को प्रभावित किया है। दूसरी ओर वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने एक सावभौमिक निराशा भी दी है। यह निराशा न केवल विकसित होने वाले देशों की है, अपितु विकसित देशों के भी है, जो इससे वे कम खुश है। अतः निराशा के मुख्य कारणों का विश्लेषण करना आवश्यक है। पहले दुनिया के देश या एक ही देश के लोग एक–दूसरे की आवश्यकता पूर्ति के लिए इतने अधिक अन्तर्निभर नहीं थे। यहाँ तो एक गाँव ही अपने आप में अलग दुनिया थी। इतिहास में यह पहली बार हुआ है कि स्थानीय और वैश्वीय लोग एक कड़ी में बंध गये हैं। यह सब कुछ पिछले बीस–तीस वर्षा में ही हुआ है और दूसरा कारण संचार साधनों में वृद्धि, सूचना तकनिक और आवागमन के साधन हैं। अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों को जोड़ने का काम बड़े–बड़े जेट हवाई जहाज करते हैं, तीव्र गति से चलने वाले जहाज करते हैं। देखते ही देखते एक जगह का उत्पादन दूसरी जगह पहुंच जाता है। पिछले तीस वर्षा में सेटेलाइट संचार व्यवस्था का विकास इस ऑति हुआ कि दुनिया के लोग एक दूसरे के साथ आराम से सम्पर्क कर सकते है। इन सब प्रक्रियाओं को दुनिया भर के सामाजिक सम्बन्धों को गहरा और घनिष्ठ कर रही है, समाजशास्त्री इसे वैश्वीकरण कहते हैं।

अध्ययन के उदेद्श्य

इस सामाजिक शोध पत्र का उद्देश्य भारतीय समाज मे परिवर्तन के विशेष संदर्भ में वैश्वीकरण का अध्ययन करना है।

- भारत में वैश्वीकरण का अध्ययन करना।
- वैश्वीकरण एवं भारतीय समाज में परिवर्तन का अध्ययन करना।
- वैश्वीकरण के नये संस्थानीकरण परिवर्तन स्थिति का अध्ययन करना।

अध्ययन की आवश्यकता :

प्रस्तुत शोध पत्र भारतीय समाज मे परिवर्तन के विशेष संदर्भ में वैश्वीकरण का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन है साथ ही वैश्विक अध्ययन का कार्य करने की आवश्यकता और महत्त्व है। वैज्ञानिक एवं समाजाास्त्रीय विद्वान, गत एक दशक से सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया के रूप मे वैश्वीकरण की अवधारणा को अध्ययन का एक केन्द्र बिन्दु मानकर चिन्तन कर रहे हैं। वैश्वीकरण ने समाज को एक नई पहचान दी है। वैश्वीकरण के प्रभाव से लगभग सभी सामाजिक संस्थाएँ प्रभावित हुई और इनके गहन अध्ययन के कारण सामाजिक एवं व्यक्तिगत संस्थाओं में जटिलता कम हुई।

शोध विधि व आंकड़ों का संग्रहण

भारतीय समाज मे परिवर्तन के विशेष संदर्भ में वैश्वीकरण का विश्लेषण करने के लिए प्राथमिक और द्वितीयक आंकडों का प्रयोग किया गया है। आंकडों को विभिन्न पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं, समाचार पत्रों इन्टरनेट आदि से इकट्टा किया गया है।

साहित्य समीक्षा

भीमसेन होरेस्ट (2011) ने सामाजिक परिवर्तन और विकास मे वैश्वीकरण की प्रक्रिया से सम्बन्धित आयामों को प्रस्तुत किया और अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, सामाजिक और सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य पर प्रकाश डाला है।

सुभाष मल्हौत्रा (2011) ने अपनी पुस्तक में भारतीय अर्थव्यवस्था का वैश्वीकरण के सन्दर्भ में चित्रण प्रस्तुत करने के अतिरिक्त भारतीय अर्थव्यवस्था को आत्मनिर्भर बनाने के उपायो का भी उल्लेख किया है।

रिशपाल मीणा (2011) वैश्वीकरण के कारण जनजातीय समाज में आये विभिन्न क्षेत्रों में परिवर्तन यथा सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्रों के बारे में वर्णन किया है।

श्याम एस. कुमावत (2017) ने अपनी पुस्तक आदिवासी समाज में प्राधिकार संरचना मे आदिवासियों की सामाजिक संरचना का उल्लेख किया। जिसमे आदिवासियो की सामाजिक संरचना को आर्थिक विकास के साथ जोड़कर देखा गया। जिसके कारण आदिवासियों की सामाजिक संरचना में परिवर्तन देखा जा रहा है।

भारत में वैश्वीकरण

भारत में वैश्वीकरण का प्रारम्भ 1991 ई. में हुआ। जब नरसिम्हाराव आरत के प्रधानमंत्री थे और मनमोहन सिंह वित्त मंत्री। यह आर्थिक नये–युग का सूत्रपात था। इस अर्थव्यवस्था की विशेषता यह है कि यह अपने नये अवतार में संघीय बाजार अर्थव्यवस्था बन गई। इसमें राज्यों को यह अधिकार मिल गया कि केन्द्रीय योजना अर्थव्यवस्था के अन्तर्गत वे अपनी वित्तीय स्थिति में परिवर्तन कर सकें। इस व्यवस्था में सुधार आता है या नहीं। इसके लिए राज्य ही उत्तरदायी है। यह नई व्यवस्था इस ऑति नियन्त्रण अर्थव्यवस्था से संघीय अर्थव्यवस्था में बदल गई। आर्थिक वैश्वीकरण का यह सूत्रपात सरकारी स्तर पर 1991 ई. में हुआ।

जवाहर लाल नेहरु के समय में हमारी अर्थव्यवस्था नियन्त्रित यानी कमाण्ड अर्थव्यवस्था थी। यह 1960 का दबाव था। पंचवर्षीय योजनाएँ पूरी ताकत से चलाई जा रही हैं। देश के विकास का एक जुनून था। आयोजना आयोग के अध्यक्ष के नाते नेहरू जी चाहते थे कि भारत में ओद्योगिक आधुनिकीकरण को सफलता से ला सके। उन्हें आधुनिक भारत का प्रणेता समझा जाता था। नेहरू जी ने बड़े–बड़े बॉधों को देखा, उन्हें नये तीर्थों की तरह प्रस्तुत किया। उनके जाने के बाद केन्द्रीय आयोजन का विचार धूमिल होने लगा। अब वैश्वीय अर्थव्यवस्था आ गई। इस अर्थव्यवस्था के पीछे कुछ कारण हैं, जिनका हम यहाँ उल्लेख करेंगे।

वैश्वीकरण एवं भारतीय समाज में परिवर्तन

भारत में भी दुनिया के अन्य देर्मा की भांति सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया बहुतेज हो गई है और सभी देशों के लोग एक ऐसी जटिल और आर्थिक कड़ी में बंध गए हैं कि इन्हें अलग नहीं समझा जा सकता है। आज हमारे देश में दुनियाभर की वस्तुएं खरीदने को मिलेंगी। यह सम्भव है कि यहाँ आपको डेनमार्क के सेब दिखाई दें. इजरायल के अंगूर खरीदने को मिले और दुनिया भर की कॉस्मेटिक वस्तुएँ पर्याप्त मात्रा में सजी–सजाई बिक्री हेतु प्राप्त हो। इसी प्रकार अन्य देशों में हमारे देश के विभिन्न अंचलों की वस्तुएँ भी पर्याप्त मात्रा में विक्री के लिए अटी पड़ी हैं। देखा जाये तो आज तक हम जिस दुनिया में रह रहे हैं. इसमें अन्योन्यामितता बढ़ गई है। हमे वैश्वीकरण को केवल दुनिया को जोड़ने वाले एक नेटवर्क की तरह ही नहीं देखना चाहिए, पर इससे आगे वैश्वीकरण हमारे स्थानीय दिन–प्रति–दिन के जीवन को भी प्रभावित करता है। यह भी समझना चाहिए कि जहाँ वैश्वीकरण लोगों को एक–दूसरे के निकट लाता है. वहीं उनमें तनाव भी पैदा करता है। स्थानीय संस्कृति और बाजार की वैश्वीय संस्कृति का आय बराबर बना रहता है। यह लगता है कि वैश्वीय संगीत कही हमारे स्थानीय संगीत राजस्थानी, ओजपुरी नाच–गाने, गुजराती गरबे, पंजाब का भंगड़ा और महाराष्ट्र के तमासी को न गटक जाये। आर्थिक क्षेत्र में भी यह भय बना रहता है। इस भांति वैश्वीकरण से जुड़े ऐसे कई मुद्दे हैं. जो भारतीय समाज को प्रभावित कर रहे हैं।

वैश्वीकरण वरदान स्वरुप

भारत में वैश्वीकरण का आरम्भ आर्थिक सुधार के रूप में हुआ। वैश्वीकरण 1991 की नई आर्थिक नीति से भारत में प्रगति हुई। वैश्वीकरण की उदारीकरण की नौति ने प्रतिस्पर्धा की भावना उत्पन्न की। बहुराष्ट्रीय उद्‌यम और अन्तः राष्ट्रीय निगम तथा नई तकनिकी जैसे कम्प्यूटर एवं दूरसंचार सुविधाएँ वैश्वीकरण के आधार स्तम्भ है। वैश्वीकरण की सुविधाओं से भारत में मुख्यतया निम्न सकारात्मक परिवर्तन हुए–

- राष्ट्रीय आय में वृद्धि तथा निजी क्षेत्रों में रोजगार।
- विश्व संचार से पारम्परिक संस्कृति का अन्य देशों में फैलाव एवं अन्य देशी की संस्कृतियाँ के समागम से मनुष्यों की अन्तः क्रियाओं में वृद्धि।
- प्रतिस्पर्धा की भावना पैदा हुई तथा जीवन स्तर में वृद्धि हुई। वैश्वीय नेटवर्क तथा वैश्वीय चेतना में वृद्धि।
- विभिन्न व्यक्तियों के विचारों और कल्पनाओं का आदान–प्रदान ।
- अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के द्वारा वैश्वीय मानकों एवं मूल्यों का विकास जैसे मानव अधिकार, अन्तर्राष्ट्रीय अदालतें, वैश्वीय अभिशासन आदि का उद्‌गम ।
- गरीबी एवं अमीरी असमानता में कमी। वे देश गरीब हो रहे हैं जो विश्व स्पर्धा में सम्मिलित नहीं हैं।
- वैश्वीकरण की प्रक्रिया से सकारात्मक सामाजिक परिवर्तनों के साथ– साथ कुछ नकारात्मक परिवर्तन भी हुए हैं।

वैश्वीकरण के संकट

वैश्वीकरण की प्रक्रिया अपने आप में अकेली नहीं है। इस आर्थिक प्रक्रिया के तीन महत्वपूर्ण पहलू हैं निजीकरण, उदारीकरण और बौद्धिक सम्पत्ति के अधिकार । संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम की रिपोर्ट ने कई महत्वपूर्ण निष्कर्ष रखे हैं। उदाहरण के लिए हथियारों की गैर–कानूनी आवाजाही सम्पूर्ण संसार में हो रही है। कुछ असामाजिक तत्वों ने तो इसे एक व्यवसाय बना दिया है। इसी तरह आतंकवाद देश की सीमाओं को लांघकर दूसरे देशों की सीमाओं पर पहुंच गया है। एड्स की बीमारी अफ्रीका से यूरोप और यूरोप से भारत तक पहुँच गई है। अन्तर्राष्ट्रीय पर्यावरण क्षरण विश्व की समस्या बन गई है। तीसरी दुनिया के बच्चों का शोषण अपनी पराकष्ठा पर पहुंच गया है। ऐसा ही कुछ प्रभाव स्त्रियों पर पड़ा है।

- आर्थिक वैश्वीकरण ने गैर–बराबरी को इतना व्यापक बना दिया है कि गरीबों को सांस लेना कठिन हो गया है।
- पूँजीवाद में अत्यधिक वृद्धि हुई। वैश्वीकरण ने एक प्रकार के नये आर्थिक और सांस्कृतिक सामाज्यवाद को पैदा किया है।
- वैश्वीकरण ने उपभोक्ता समाज तैयार किया है, जिनकी वृद्धि बहुराष्ट्रीय निगमों का परिणाम।
- वैश्वीय संस्कृति स्थानीय संस्कृति को प्रभावित कर रही है।
- पश्चिमी विचारों को गलत तरीके से सार्वभौमिक बनाया जा रहा है, जो स्थानीय परम्पराओं को नष्ट कर रहे हैं, जो सांस्कृतिक साम्राज्यवाद का निर्माण कर रहे हैं।
- वैश्वीकरण ने भ्रष्टाचार की संस्कृति को फैलाया है।

वैश्वीकरण के नये संस्थानीकरण परिवर्तन

वैश्वीकरण से भारत में निम्न पहलुओं के आधार पर एकीकृत रूप में सामाजिक परिवर्तन से नये संस्थानीकरण हुए हैं–

(1) बाजार, व्यापार एवं वित्त

(2) मीडिया एवं संचार

(3) विज्ञान एवं तकनीकी

(4) प्रव्रजन तथा अनंत सांस्कृतिक परिवर्तन–संबंधी

(5) एकीकरण और पहचान की समस्या ।

संरचनात्मक रूप से वैश्वीकरण एक ऐतिहासिक प्रक्रिया है जो सामाजिक परिवर्तन के दौर में पहले कृषक समाज से औद्योगिक एवं उत्तर औद्योगिक तथा अन्त में मीडिया समाज से गुजर रही है। आज वैश्वीकरण के युग में सभी व्यक्ति विश्व बाजार में खरीददार और बेचने के लिए असमान शर्तों से जुड़े हुए हैं।

बाजार, व्यापार एवं वित्त

आज बाजार, व्यापार एवं वित्त अन्तर्राष्ट्रीय हो गये हैं। आर्थिक वैश्वीकरण का बुनियादी आधार पर व्यापार है। वैश्वीकरण की बहुत बड़ी उपलब्धि उसका अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार है। परम्परागत रूप से भारत में बाजार एवं व्यापार की बड़ी विकसित व्यवस्था रही है, जो आज तक भी स्थानीय संस्कृति से जुड़ी रही, लेकिन वैश्वीकरण से यह व्यवस्था अन्तर्राष्ट्रीय निगमों के हाथ में आ गयी और इससे स्थानीय व्यापारी संकट में आ गये। इसमें कोई संदेह नहीं कि व्यापार, निवेश और वित्त वैश्वीकरण के बुनियादी आधार हैं। ऐसा नहीं है कि इन तत्त्वों का विकास समान रूप से भारत में हुआ है।

मीडिया एवं संचार

कई शताब्दियों तक भारत एक मौखिक समाज था। बड़े–बड़े व्यापार मौखिक होते थे। आज मौखिक समाज से मीडिया समाज बन गया है। वैश्वीकरण ने यह सब पिछले दस वर्षों में क्रान्तिकारी रूप से बदला दिया। समाचार पत्रों के अतिरिक्त दूरसंचार सुविधाएँ भी हैं, जिनमें रेडियो, टेलिविजन, फिल्म, टेलिफोन, मोबाइल फोन, ई–मेल, फैक्स, इन्टरनेट आदि सम्मिलित हैं। कम्प्यूटर सेवाओं की वृद्धि हुई है। इन सब दूरसंचार सुविधाओं ने आर्थिक विकास, व्यापार तथा बौद्धिक व्यवहार में क्रान्तिकारी परिवर्तन ला दिये हैं।

विज्ञान एवं तकनीकी

आज विज्ञान ने नई–नई तकनीकियों प्रदान कर दी हैं, जिसमें साधारण तकनीकी से अति–तकनीकी ने आर्थिक साधनों में वृद्धि की है। आज हम बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के द्वारा विश्व उत्पादन का उपभोग कर रहे है। इससे उपभोग की संस्कृक्ति का आर्विभाव हो गया है। आज विज्ञान एवं तकनिकी व्यक्ति एवं समाज को सम्पूर्ण रूप से प्रभावित कर रही है।

प्रवजन तथा अन्तर सांस्कृतिक आदान–प्रदान

वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने प्रवजन, पर्यटन एवं यात्रा में काफी वृद्धि की है। इससे सामाजिक एवं सांस्कृतिक समरूपता आने लगी थी तथा बाहुल्यता एवं सांस्कृतिक विभिन्नताओं का समावेश हुआ। भारत में पर्यटन पहले केवल धार्मिक यात्रा के रूप में था जो आज अवकाश में देश–विदेश की यात्रा का हिस्सा बन गया है। समय के अन्तराल में पर्यटन ने त्यौहारों, धार्मिक समूहों के विभिन्न कार्यों को सुदृढ़ किया है। वैश्वीकरण और सूचना प्रोद्यौगिकी के कारण स्थानान्तरण, पर्यटन और यात्रा में वृद्धि हुई है। सजातीयकरण के प्रभाव पर्यटन के कारण बढ़ते दिखाई देते है। दूसरे देशों में जो प्रवासी भारतीय हैं, वे अपनी सांस्कृतिक पहचान को बनाये रखने का प्रयास करते हैं। घरेलू पर्यटन में भी आवागमन की सुविधाओं के कारण वृद्धि हुई है।

एकीकरण और पहचान की समस्या

वैश्वीकरण का सांस्कृतिक प्रभाव हुआ है। वास्तव में वैश्वीकरण स्थानीयता के साथ जुड़ा होता है। यह सही है कि बाजार अर्थव्यवस्था, मीडिया की शक्ति तथा सूचना तकनीकी तंत्र ने स्थानीय संस्कृति के सामने पहचान की बहुत बड़ी समस्या पैदा कर दी है। यही कारण है कि सांस्कृतिक आधुनिकीकरण, वैश्वीकरण के माध्यम से स्थानीय लोगों की संस्कृति पर आघात करता है, लेकिन इसी वैश्वीकरण और आधुनिकीकरण ने स्थानीयता को तोड़ने की अपेक्षा सुदृढ किया है।

निष्कर्ष :

वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने लोगों के औद्योगिक पैटर्न और सामाजिक जीवन को बदल दिया है। इसका भारतीय व्यापार, वित्त और सांस्कृतिक व्यवस्था पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा है। आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संरचनाओं का वैश्वीकरण एक साथ हुआ। पहले, इस प्रक्रिया की गति धीमी थी, लेकिन अब सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग से हर क्षेत्र में बिजली की गति से बदलाव हो रहा है। वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप कई प्रकार की वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में वृद्धि हुई है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने दुनिया भर में विनिर्माण संयंत्र स्थापित किए हैं। इसका भारत पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है और प्रशासन कई बाधाओं को दूर करने और व्यापार को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विस्तारित करने के लिए वैश्विक नीतियों को अपनाने की पूरी कोशिश कर रहा है। भारत निश्चित रूप से अंतर्राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त कर रहा है जिससे आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्रों में मजबूती आ रही है। सचमुच, वैश्वीकरण ने दुनिया को एक छोटा स्थान बना दिया है, जहां विभिन्न लोग विभिन्न तरीकों से एक–दूसरे से जुड़े हुए हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. फीदर स्टोन, एम. (एडिटेड) ग्लोबल कल्चर लन्दनः सेज पब्लिकेशन्स, 1990
2. राबर्टसन, आर. ग्लोबलाइजेशन् लन्दनः सेज पब्लिकेशन्स 1992
3. योगेन्द्र सिंह, कलचर चांग इंडिया जयपुरः रावत प्रकाशन, 2000
4. दोषी, एसं. एल. : आधुनिकता, उत्तर आधुनिकता एवं नव–समाजशास्त्रीय सिद्धान्त'' रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2002
5. एस.एल., एस.एल. आधुनिकता, उत्तर– आधुनिकता एवं नव–समाजशास्त्रीय सिद्धांत जयपुरः रावत प्रकाशन 2002
6. चौहान, डॉ. आई.एसं. : भारत मे सामाजिक परिवर्तन मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 2004
7. दोषी, एसं.एल. एवं जैन, पी.सी. : समाजशास्त्र की नई दिशाए पब्लिकेशन्स हाऊस, नई दिल्ली 2009
8. सिंह, शिवबहाल, ''विकास का समाजशास्त्र'' रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2010,
9. यादव, डॉ. पूरणमल एवं भट्‌ट, दिनेश चन्द्र, वैश्वीकरण : ''एक समाजशास्त्रीय अवधारणा'' गौतम बुक कम्पनी, जयपुर, 2013
10. गुप्ता, डॉ. मिथलेश : भूमण्डलीकरण एवं सामाजिक परिवर्तन गौतम बुक कम्पनी, जयपुर, 2013
11. भार्गव, नरेश : वैश्वीकरण, समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2015